वास्तविक शांति
इस्लामी शिक्षाओं के आलोक में

भाषण

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब
ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़

वास्तविक शांति
इस्लामी शिक्षाओं के आलोक में

भाषण

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब

ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़

नाम पुस्तिका	वास्तविक शांति, इस्लामी शिक्षाओं के आलोक में
भाषण	सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़
अनुवादक	इब्नुल मेहदी लईक (मुरब्बी-ए-सिलसिला, M.A. Hindi)
संस्करण	प्रथम संस्करण (हिन्दी) जनवरी 2024 ई०
संख्या	1000
प्रकाशक	नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	Vastavik Shanti, Islami shikshaaon ke aalok mein
Speech	Hazrat Mirza Masroor Ahmad sahib Khalifatul Masih 5th
Translator	Ibnul Mehdi Laeeque (M.A. Hindi Murabbi-e-Silsila)
Edition	1st Edition (Hindi) January 2024
Quantity	1000
Publisher	Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

वास्तविक शांति
इस्लामी शिक्षाओं के आलोक में

(जलसा सालाना, अहमदिया जर्मनी 2022 ई. के समापन समारोह से अंतर्राष्ट्रीय इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का विशेष ईमान वर्धक संदेश।

दिनांक 21 अगस्त 2022 ई. दिन रविवार स्थान एवान-ए-मसरूर, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड, यू.के)

वास्तविक शांति संसार में उस समय तक स्थापित नहीं हो सकती जब तक एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा को स्वीकार न किया जाए......यह सिद्धांत कि अल्लाह तआला अमन देने वाला है केवल इस्लाम ने ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

"हे यूरोप! तू भी अमन में नहीं और हे एशिया! तू भी सुरक्षित नहीं और हे द्वीपों के रहने वालो! कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा, मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को वीरान पाता हूँ।"

(हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

ऐसे में यदि कोई आशा की किरण है, अमन की ज़मानत है तो एक ही वजूद है जिसको अल्लाह तआला ने अमन व सलामती की शिक्षा के साथ दुनिया में भेजा था, जो अमन के बादशाहों का बादशाह है। जो अल्लाह तआला को समस्त इन्सानों से अधिक प्रिय है, जिस पर अल्लाह तआला का सर्वोत्कृष्ट पूर्ण

और व्यापक विधान अवतरित हुआ, जिसकी शिक्षा प्रेम और मुहब्बत से परिपूर्ण है।

वास्तविक शांति तभी होगी जब निजी, पारिवारिक, नस्ली, जातीय तथा राष्ट्रीय स्वार्थों से ऊपर उठ कर शांति स्थापित करने की कोशिश की जाए। एक मुख्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कोशिश की जाए और यह उसी अवस्था में हो सकता है जब इन्सान इस बात को समझ ले और इसकी समझ-बूझ पैदा कर ले कि मेरे ऊपर एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा है जो केवल मेरे लिए ही अमन-शांति नहीं चाहता बल्कि समस्त संसार के लिए अमन चाहता है।

अल्लाह तआला ने अपने नूर, जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और क़ुरआन करीम जो प्रकाशमान पुस्तक और समस्त ज्ञानों तथा आध्यात्म ज्ञानों का मुख्य स्त्रोत और सन्मार्ग का प्रकाश है और सलामती का पैग़ाम है, को भेज कर मानव जाति पर बहुत बड़ा उपकार किया है, यदि मनुष्य इससे लाभ न उठाए और स्वयं का विनाश करने वाली स्वार्थ परायणताओं में ही डूबा रहे तो इस से बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे तथा महान सेवक (मसीह व महदी) के साथ संबद्ध होना भी आवश्यक है, तभी ज्ञान एवं आध्यात्म ज्ञान की सच्ची सूझ-बूझ प्राप्त हो सकती है।

आज यह काम मसीह मौऊद व महदी माहूद की जमाअत के सपुर्द किया गया है, यदि हमने घर से ले कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक इसके अनुसार अपनी भूमिका नहीं निभाई तो हमारे अमन और सलामती में रहने की कोई ज़मानत नहीं है।

हमारे विरोधी जो चाहे सोचें और करें, हमारा काम है कि यदि हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा को अपनाएं और दुनिया में फैलाएं और दुनिया को बताएं कि आज दुनिया की अमन और सलामती का केवल यही एक हल है, अतः आओ और अमन और सलामती की शिक्षा देने वाले उस महान वजूद से जुड़ कर लोक और परलोक में अपनी सलामती के सामान पैदा कर लो।

अमन उस समय तक स्थापित हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर सच्चा भाईचारा उत्पन्न न हो और सच्चा भाईचारा एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा पर विश्वास किए बिना पैदा नहीं हो सकता।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अवतरित होने वाली परिपूर्ण शरीयत (क़ुरआन करीम) में वर्णित सिद्धांतों के आलोक में सच्चे और स्थायी वैश्विक शांति की स्थापना के संदर्भ में ईमान वर्धक भाषण।

जमाअत के लोगों को अपना चरित्र इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार बनाते हुए संसार में उत्तम आदर्श प्रस्तुत करने की नसीहत।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ ۔

अल्लाह तआला की अत्यंत कृपा तथा उपकार है कि उसने विश्व की वर्तमान प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भी जमाअत अहमदिया जर्मनी को अपना जलसा सालाना आयोजित करने का अवसर प्रदान किया। और पिछले वर्ष की तुलना में व्यापक स्तर पर विस्तृत प्रबंधों के साथ आप लोग यह जलसा आयोजित कर रहे हैं। पहले Covid की महामारी ने दुनिया को व्याकुल किया और अभी वह महामारी की समस्या ख़त्म नहीं हुई कि अब दुनिया में जंगों के हालात ने दुनिया को एक और भयानक मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है। दुनिया का कोई भी भू-भाग इस अनुमानित विनाश से सुरक्षित नहीं दिखाई देता। अतः **जब तक लोग एक ख़ुदा की ओर नहीं झुकेंगे, तबाही से नहीं बच सकते।**

पहले तो यूरोप और पश्चिमी देश और विकसित देश इस भ्रम में बैठे हुए थे कि विभिन्न क्षेत्रों में जहां उपद्रव, युद्ध और विनाश की परिस्थितियाँ पैदा हुई हैं या हो रही हैं तथा देशों के विनाश के हालात जहां पैदा हुए हैं या हो रहे हैं वह हमसे हज़ारों मील दूर हैं

हम पर कोई आंच नहीं आएगी हम तो सुरक्षित हैं। जो बम पड़ रहे हैं, लोग मर रहे हैं, औरतें विधवा हो रही हैं, बच्चे यतीम हो रहे हैं, लोग अपाहिज हो रहे हैं वह तो एशिया में और मध्य पूर्व एशिया में और ग़रीब देशों में हो रहे हैं, हमें क्या फ़र्क़ पड़ता है। विकसित देश अपने स्वार्थ के लिए उन देशों को हथियार उपलब्ध कराते रहे कि हमारे हथियार बिकते रहें। ये मरते हैं तो मरें, क्या फ़र्क़ पड़ता है। लेकिन भूल गए कि यह परिस्थितियाँ उन पर भी आ सकती हैं और अपनी उन्नति के भ्रम में उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई और आँखें अंधी हो गई और फिर **अब समस्त संसार देख रहा है कि वही हुआ जिसका डर था और यूरोप में भी युद्ध की परिस्थितियां उत्पन्न हो गई हैं।**

यूक्रेन की वजह से रूस और नाटो (NATO) के देश आमने-सामने खड़े हैं। अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि अंततः प्रभुत्व किसको मिलेगा या दोनों ओर कितना नुक़्सान होना है लेकिन यह निश्चित है कि इस के परिणाम बहुत भयानक होंगे। **यदि अब भी विवेक से काम न लिया तो इसका परिणाम एक भयानक विनाश है।**

फिर हम देखते हैं कि अब ताइवान की समस्या भी खड़ी हो गई है और स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि अब सारी दुनिया भयनाक युद्ध के किनारे पर खड़ी है। इस ज़माने के अल्लाह तआला के भेजे हुए सुधारक ने घोषणापूर्वक सचेत किया है कि:

"हे यूरोप! तू भी अमन में नहीं और हे एशिया! तू भी सुरक्षित नहीं और हे द्वीपों के रहने वालो! कोई बनावटी ख़ुदा

तुम्हारी मदद नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को वीरान पाता हूँ।''

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 269)

यही वह संदेश है और चेतावनी है और warning है जिसके कारण ख़ुलफ़ा-ए-अहमदियत समय-समय पर ध्यान दिलाते रहे हैं। मैं भी एक लंबे समय से इस ओर ध्यान दिला रहा हूँ और यह बता रहा हूँ कि **यदि अपने पैदा करने वाले एक ख़ुदा की ओर नहीं झुकोगे तो विनाश निश्चित है।**

बहुत पहले से बता रहा हूँ कि ब्लाक बन रहे हैं और इस का आख़िरी परिणाम एक दूसरे के विनाश पर ही होगा, इसलिए सजग हो जाओ और बुद्धि और वेवेक से काम लो लेकिन अधिकतर ये लोग ये बातें सुनते हैं, पहले भी सुनते थे और अब भी सुनते हैं और कह देते थे और अब भी कह देते हैं कि हालात थोड़े से ख़राब हैं। लेकिन ऐसे भी नहीं जैसे तुम भयानक और निराशाजनक हालात का नक़्शा खींच रहे हो। मुझसे भी लोगों ने कहा और हमारी अपनी जमाअत के लोगों ने कहा लेकिन **अब यही लोग जो इन बातों को सरसरी नज़र से देखते थे ख़ुद कहने लग गए हैं कि हालात बुरे से बुरे होते चले जा रहे हैं और यदि यही स्थिति रही तो किसी भी समय भयानक युद्ध छिड़ सकता है।**

अब ये बातें उनके थिंक टैंक (think tank) और विश्लेषक व्यापक रूप से कहने लग गए हैं स्थायी अमन स्थापित करने का स्रोत उनके पास नहीं है और यह हो भी कैसे सकता है क्योंकि अमन देने वाले की ओर उनकी नज़र नहीं है। काम, क्रोध, मोह, लोभ की

सांसारिकता में डूबे हुए हैं और धर्म एवं कर्तव्यों को भूल चुके हैं।

बेचैनी और विनाश का हल है उसके पास न ये ग़ैर मुस्लिम हुकूमतें आना चाहती हैं और न ही दुर्भाग्य से मुसलमान हुकूमतें आना चाहती हैं।

अब कुछ विश्लेषक यह भी कह रहे हैं कि जंगों की स्थिति में जो तबाही होनी है वह ऐसी भयानक होगी कि एक अनुमान के अनुसार युद्ध के समय एवं युद्ध के बाद के दो वर्षों में परमाणु हथियारों के उपयोग के कारण दुनिया की 66% फ़ीसद जनसंख्या दुनिया से नष्ट हो जाएगी। ऐसा विनाश और विध्वंस होगा जिसका कोई अनुमान भी नहीं लगा सकता। एक साधारण व्यक्ति तो इस का अनुमान भी नहीं कर सकता। अतः अत्यंत भयानक परिस्थितियाँ हैं।

ऐसे में यदि कोई उम्मीद की किरण है, अमन की ज़मानत है तो एक ही वजूद है जिसको अल्लाह तआला ने अमन व सलामती की शिक्षा के साथ दुनिया में भेजा था, जो अमन के बादशाहों का बादशाह है, जो अल्लाह तआला को समस्त इन्सानों से अधिक प्रिय है, जिस पर अल्लाह तआला का सर्वोत्कृष्ट, पूर्ण और व्यापक विधान अवतरित हुआ है, जिसकी शिक्षा प्यार मुहब्बत से परिपूर्ण है जिसने अपने ख़ुदा से प्रेम के कारण और अपने ऊपर उत्तरी हुई शिक्षा को लोगों तक पहुँचाने और लोगों को विनाश से बचाने और उनका ख़ुदा से संबंध स्थापित कराने की चिंता और उनके लिए अत्यंत दुख-दर्द सहने के कारण अपना जीवन दूभर कर लिया था और इस हद तक अपनी हालत कर ली थी और पीड़ा से तड़प कर और रो-रो कर अल्लाह

तआला से दुआएं कीं कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाया :

(अश्शोअरा : 4) لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ

अर्थात क्या तू अपने आप को इस ग़म में नष्ट कर लेगा कि वे लोग अल्लाह की बातों को स्वीकार नहीं करते हैं।

अतः यह है वह हस्ती जो दिल में इन्सानियत के लिए दर्द रखती थी कि लोग अपने पैदा करने वाले की तरफ़ झुकें और विनाश से बच जाएं। अपना सांसरिक जीवन भी बचा लें और परलोक भी। ऐसी संपूर्ण शिक्षा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्रदान की कि कोई और शिक्षा उस का मुक़ाबला नहीं कर सकती। ऐसी अमन की गारंटी दी जो वस्तुतः अल्लाह तआला की दी हुई ज़मानत है लेकिन **अफसोस कि मुसलमान भी इस शिक्षा को भूल गए और ईमान के केवल खोखले नारे लगा कर एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो गए हैं और इस के लिए दूसरों से मदद की मांग करते हैं।**

मुसलमान, मुसलमानों को ही इस्लाम के विरोधियों की सहायता से क़त्ल कर रहे हैं। इस से अधिक मुसलमानों का दुर्भाग्य और क्या हो सकता है? ऐसी सुंदर शिक्षा और ऐसा दर्द रखने वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण का दावा करने के बावजूद अल्लाह तआला की नाराज़गी मोल ले रहे हैं और दुनिया में अमन व सलामती फैलाने की बजाय अशांति फैलाने के नाम से मशहूर होते चले जा रहे हैं और ये सब इसलिए है कि अल्लाह तआला ने जो इस ज़माने में अमन व सलामती के

शहँशाह और अल्लाह तआला के सबसे प्रिय ग़ुलाम को दुनिया में अमन और सलामती की शिक्षा फैलाने के लिए भेजा है उस की बात भी सुनना नहीं चाहते और न सिर्फ बात को सुनना नहीं चाहते बल्कि इस हद तक बढ़ गए हैं कि उस पर और उस के मानने वालों पर कुफ्र के फ़त्वे लगाने वाले और उनको क़त्ल करने को इस्लाम की सेवा और ख़ातमुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ प्रेम का उच्च पैमाना समझते हैं। अहमदियों की ज़िंदगियों से खेलना उनके निकट पुण्य का कार्य है। ऐसे लोग किस तरह इस्लाम की अमन और सलामती से भरी शिक्षा को दुनिया में फैला सकते हैं?

काश कि यह लोग बुद्धि और विवेक से काम लें। उनके उलमा बद्तरीन उलेमा बनने के बजाय बुद्धि और विवेक फैलाने वाले उलमा बने ताकि उम्मते वाहिदा बन कर (एक जुट हो कर) हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा को दुनिया में फैलाने वाले बने और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक के साथ मिलकर दुनिया को वास्तविक अमन और सलामती का संदेश पहुंचा सकें। बहरहाल यह एक अलग और विस्तृत विषय है।

इस समय मैं हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा और उन पर अवतरित धर्मविधान (शरीयत) और उनकी अमन व सलामती फैलाने वाली शिक्षा की दृष्टि से वैश्विक अमन और सलामती के बारे में कुछ बातें प्रस्तुत करूँगा

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा और

आप का आदर्श तो इतना व्यापक और सर्वोत्कृष्ट है कि इस को थोड़े से समय में पूर्ण रूप से वर्णन कर पाना संभव नहीं। लेकिन बहरहाल जैसा कि मैंने कहा कुछ बातें वर्णन करूँगा।

जमाअत अहमदिया के बारे में कहा जाता है कि नऊज़ुबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान और तिरस्कार करते हैं और उसकी तालीम देते हैं लेकिन हक़ीक़त में हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा का पालन करने वाले और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करने वाले हैं। जमाअत का लिट्रेचर इस बात का गवाह है। हर साल हज़ारों सदप्रवृति लोग इस शिक्षा और मुहब्बत को देखकर जमाअत अहमदिया मुस्लिमा में शामिल होते हैं। दूसरे लोग भी यह कहने पर मजबूर हैं कि इस्लाम की यह शिक्षा तो ऐसी प्रभावी और मुहब्बत और सलामती फैलाने वाली शिक्षा है कि दुनिया की अमन का आज केवल यही एक हल है।

अभी कुछ दिन पहले मैंने यूनाइटेड किंगडम (U.K) के जलसा सालाना में जमाअत की तरक़्क़ी की रिपोर्ट में और जलसे के प्रति लोगों की अभिव्यक्तियाँ सुनाईं कि किस तरह वे लोग अहमदी माहौल और जलसा के माहौल से प्रभावित हुए और उन्हें इस्लाम की अमन पसंद तालीम का पता चला। अतः हमारे विरोधी चाहे जो भी सोचें और करें, हमारा काम है कि यदि हमें आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत है तो आप की शिक्षाओं को अपनाएं और दुनिया में फैलाएं। दुनिया को बताएं कि

आज दुनिया के अमन और सलामती की रक्षा का यही एक हल है। अत: आओ और अमन तथा सलामती की शिक्षा देने वाले इस महान वजूद से जुड़ कर लोक-परलोक में अपनी सलामती का उपाय कर लो। ये सिर्फ़ बातें ही नहीं हैं बल्कि जब हम इतिहास का अध्ययन करते हैं तो देखते हैं कि किस तरह उस नबी (अवतार) ने अरब के अनपढ़ और अज्ञानी लोगों को आज्ञानता के घोर अंधकार से निकाल कर सर्वोत्कृष्ट शिष्टाचार एवं ज्ञान और कर्म की गगनचुम्बी ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"वही रसूल जिसने वहशियों को इन्सान बनाया और इन्सान से बाअख़लाक़ (महान शिष्टाचारी) इन्सान, अर्थात सच्चे तथा वास्तविक शिष्टाचार के संतुलित केंद्र पर ला खड़ा किया और फिर बाअख़लाक़ (महान शिष्टाचारी) इन्सान से बाख़ुदा (अल्लाह वाला) होने के ख़ुदाई रंग से रंग दिया।"

(मजमूआ इश्तेहारात, भाग 2 पृष्ठ 183 الاشتہار مستیقنًا بوحی اللہ القہار, प्रकाशन नज़ारत नश्र व इशाअत क़ादियान 2019 ई.)

अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने मानने वालों और मुहब्बत करने वालों को शिष्टाचार और इबादतों के वे गुण सिखाए जिन्होंने उन्हें ख़ुदा तआला का सानिध्य पाने वाला बना दिया और उनका हर कथन और कर्म ख़ुदा तआला का प्रेम प्राप्त करने के लिए हो गया। बंदों के अधिकारों की अदायगी भी की तो ख़ुदा तआला का प्रेम पाने के लिए। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा अनुकरण इन्सान को उस स्तर तक ले जाता है

जहां वह अल्लाह तआला से सच्ची मुहब्बत करने वाला बन जाता है और यह सच्ची मुहब्बत फिर इन्सान के हर कथन और कर्म को ख़ुदा तआला का प्रेम प्राप्त करने वाला बना देती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चे दिल से अनुकरण करने वाले के बारे में फ़रमाते हैं कि :

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चे दिल से अनुकरण करना और उनसे प्रेम रखना अंततः इन्सान को ख़ुदा का प्यारा बना देता है।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 67)

अतः यह परिवर्तन था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों के दिलों में पैदा किया कि जो मुशरिक (बहुदेववादी) थे वे मौहिद (एकेश्वरवादी) बने और ऐसे एकेश्वरवादी बने कि ख़ुदा तआला के प्रिय बन गए। वे ख़ुदा तआला से मुहब्बत करने वाले और ख़ुदा तआला उनसे मुहब्बत करने वाला बन गया। अल्लाह तआला से मुहब्बत करने वालों ने इबादत के भी हक़ अदा किए और क्या ख़ूब अदा किए। अल्लाह तआला की दी हुई शिक्षा का पालन शुरू किया और क्या ख़ूब किया और उसके सर्वोत्कृष्ट मानक स्थापित किए।

जब किसी से मुहब्बत होती है तो फिर उसके प्रत्येक कथन और कर्म पर इंसान चलने की कोशिश करता है, उसकी हर बात सुनने और उस को मानने की कोशिश करता है। मौखिक प्रेम का दावा नहीं करता। अतः जब उन लोगों में ख़ुदा तआला की मुहब्बत पैदा हुई तो ख़ुदा तआला की सृष्टि के हक़

अदा करने की ओर भी ध्यान आकृष्ट हुआ। जनता के अधिकारों को अदा करने में भी एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करने वाले बनने लगे। और जब यह परिस्थिति उत्पन्न हो जाए तो फिर आप का प्रेम भी अल्लाह के लिए ही उत्पन्न होता है। दूसरों के हक़ भी ख़ुदा तआला का प्रेम पाने के लिए इन्सान अदा करता है और जब यह उत्कृष्ट आदर्श बन जाएं तो फिर अमन और सलामती की भी बुनियाद पड़ती है, उस के लिए कोशिश होती है और उसके आदर्श स्थापित होते हैं।

अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह महान वजूद हैं जिन्होंने हमें ख़ुदा तआला से मिलने के रास्ते दिखाए और यही महान वजूद हैं जिस पर उतरी हुई सर्वोत्कृष्ट शिक्षा एवं विधान का अनुपालन कर के हम दुनिया में अमन और सलामती स्थापित कर सकते हैं।

हमेशा याद रखना चाहिए कि अमन की बुनियाद घरों से शुरू होती है। फिर मुहल्ले, क़स्बे, शहर, देश और विश्व की सतह तक उस का दायरा बढ़ जाता है।

अतः जब हर सतह पर एक दूसरे के अधिकारों और भावनाओं का ख़्याल रखा जाता है तभी तो अमन क़ायम होता है और यही तालीम अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से हर स्तर के लोगों को दी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस विषय पर विभिन्न अवसरों पर वर्णन करते थे लेकिन एक अवसर पर इस शीर्षक को वर्णन किया :-

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम
और वैश्विक अमन"

उनके इस लेख से लाभ उठाते हुए मैं भी इस संदर्भ में कुछ वर्णन करूँगा।

यह तो हम देखते हैं और समझते हैं कि अमन बड़ी महत्त्वपूर्ण चीज़ है। अमन की बातें होती हैं, हर कोई कहता है अमन बहुत महत्वपूर्ण चीज़ है और अमन की हालत ही घर के सुकून और सलामती की भी ज़मानत है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अमन तथा सुरक्षा की ज़मानत है और इच्छा भी रखते हैं कि हर स्तर पर अमन क़ायम हो लेकिन **केवल इच्छा अमन पैदा नहीं कर सकती क्योंकि यहां भी अमन की इच्छा स्वार्थ से मिश्रित होती है और यही हम आज दुनिया में देखते हैं।**

यदि स्वार्थ न हो तो लड़ाइयां हो ही नहीं सकतीं। साधारणतः जब कोई अमन की बात करता है तो अमन की इच्छा अपने लिए होती है बल्कि सामान्यतः जब इन्सान दुआ करता है और यदि नहीं भी करता तब भी यही कहता है अर्थात कई बार इच्छा का प्रदर्शन ज़बान पर भी आ जाता है कि अल्लाह तआला मुझे और मेरे बीवी-बच्चों को, मेरे रिशतेदारों को अमन में रखे। दूसरों के अमन के लिए यह दर्द नहीं होता या इन्सान अपनी ज़िंदगी सुकून से गुज़ारने के लिए दौलत चाहता है और उसको अच्छा समझता है तो इसका मतलब यह नहीं कि दुश्मन के लिए भी वह दौलत को अच्छा समझता है बल्कि सिर्फ अपने लिए दौलत को अच्छा समझता है। अगर सेहत को अच्छा समझता है तो इस का मतलब

यह नहीं कि दुश्मन के लिए भी अच्छी सेहत चाहता है। दुश्मन के लिए तो यही चाहेगा कि वह कंगाल हो और कमज़ोर हो ताकि उसको दुश्मन पर श्रेष्ठता रहे। इसी तरह पद तथा प्रतिष्ठा यदि लोग चाहते हैं तो अपने लिए, हर व्यक्ति के लिए यह कभी नहीं चाहेंगे कि दूसरे को भी वही सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिले जो मुझे मिल रही है। दुनिया में यही नज़ारे हमें नज़र आते हैं आम लोगों में भी और लीडरों में भी। राजनीतिज्ञों की आपस की लड़ाइयाँ और प्रभुत्व में आने पर एक दूसरे पर अत्याचार जो अपने ही देशों में हम देख रहे हैं, एक दूसरे पर जो कर रहे हैं वह इसी सोच का परिणाम है। यदि केवल अमन की इच्छा है तो वह फ़साद का का कारण कैसे बन सकती है उस में स्वार्थ शामिल है। क्योंकि जो लोग अमन चाहते हैं वह इस रंग में अमन के इच्छुक हैं कि सिर्फ उन्हें और उनके क़रीबियों को या उनकी क़ौम को ही अमन मिले हो। अन्यथा दूसरों के लिए और दुश्मनों के लिए वह यही चाहते हैं कि उनके अमन को मिटा दें। अतः यदि इस सिद्धान्त को लागू कर दिया जाए कि अपने लिए और पैमाना और दूसरे के लिए और पैमाना तो दुनिया में जो भी अमन क़ायम होगा वह कुछ लोगों का अमन होगा, सारी दुनिया का अमन नहीं होगा। **और यदि सारी दुनिया के लिए अमन न हो तो वह सच्चा अमन नहीं कहला सकता। सच्चा अमन तभी होगा जब व्यक्तिगत, पारिवारिक, जातीय, क़ौमी, राष्ट्रीय स्वार्थों से ऊपर उठ कर स्थापित करने की कोशिश की जाए, एक मुख्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कोशिश की जाए। और यह उसी दशा में हो सकता है जब इन्सान इस**

बात को समझ ले कि मेरे ऊपर एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा है जो केवल मेरे लिए ही अमन नहीं चाहता बल्कि समस्त संसार के लिए अमन चाहता है, जो मेरे घर और देश के लिए ही अमन नहीं चाहता बल्कि समस्त देशों के लिए अमन चाहता है। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अमन दायक शिक्षा का मुख्य बिन्दु यह एहसास दिलाता है कि एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा मुझे देख रहा है जिसके लिए हमेशा मैंने अपनी कथनी-करनी को एक करना है।

इस सिद्धान्त पर चलने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए इस स्वर्णिम सिद्धान्त को हमेशा सामने रखना होगा कि दूसरे के लिए भी वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद हो।

अतः इस सिद्धान्त को सामने रखते हुए हमेशा यह सोच रखनी होगी कि यदि मैं सिर्फ अपने लिए या अपनी क़ौम के लिए या सिर्फ अपने देश के लिए अमन का इच्छुक हूँ तो इस दशा में मुझे अल्लाह तआला की सहायता, और उस का सानिध्य कभी प्राप्त नहीं हो सकता।

जब इस सिद्धान्त पर इन्सान अडिग हो जाए कि अल्लाह तआला के लिए सब कुछ करना है तभी सच्चा अमन स्थापित हो सकता है अन्यथा नहीं।

अतः अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से क़ुरआन करीम में اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ (अलहश्र : 24) अर्थात वह बादशाह है, पाक है, दूसरों को पाक करता

है। ख़ुद हर एक दोष से पवित्र है, दूसरों को सलामत रखता है, सबको अमन देने वाला है, यह फ़रमा कर हमें स्वार्थगत बातों की सोच से दूर कर दिया। यह कह कर कि اَلۡمَلِكُ الۡقُدُّوۡسُ السَّلٰمُ الۡمُؤۡمِنُ इन्सानी इरादों को पाक साफ़ कर दिया है और यह सच है कि जब तक नीयत साफ न हो उस वक़्त तक काम भी सही नहीं हो सकता। नीयत ही साफ़ न हो तो काम में बरकत किस तरह पड़ सकती है? यह याद रखना चाहिए कि जब तक नीयत साफ न हो कभी भी काम सही नहीं हो सकता।

दुनिया में इस समय जितनी लड़ाइयाँ और फ़साद हैं वे सब इस कारण हैं कि लोगों की नीयत साफ़ नहीं हैं।

लोग मुँह से जो बातें करते हैं उनके अनुसार उनकी इच्छाएँ नहीं और उनकी इच्छाओं के अनुसार उनके करनी और कथनी नहीं और इस फ़साद में दुनिया की बड़ी और विकसित क़ौमों का बड़ा किरदार है। आज बेशक दुनिया लड़ाई को बुरा कहती है और हर लीडर यही कह रहा है कि लड़ाई बुरी चीज़ है। लेकिन उसका मतलब सिर्फ यह है कि यदि हमारे ख़िलाफ़ कोई लड़े तो यह बुरी बात है। लेकिन यदि उनकी ओर से युद्ध का आरंभ हो तो यह कोई बुरी बात नहीं है। यह बुराई इस वजह से है कि उन लोगों की नज़र उस हस्ती पर नहीं है जो "सलाम" है और सलामती देने वाली हस्ती है। वे समझते हैं कि जहां तक हमारा फ़ायदा है हम अमन के नारे लगाएंगे लेकिन जब हमारे स्वार्थ के विरुद्ध बात आएगी तो हम ठुकरा देंगे। हमारे दुश्मन की कोई मदद करे और उसे हथियार दे तो यह किसी अवस्था में स्वीकर योग्य नहीं है पर यदि हम किसी को हथियार दें, चाहे वह अत्याचार करने के लिए ही प्रयोग हो रहा

हो, तो यह उचित और जायज़ है। यदि यह सोच हो तो किस तरह सच्चा अमन स्थापित हो सकता है?

अतः दुनिया में वास्तविक शांति लाने के लिए यही सिद्धान्त और इसका पालन लाभप्रद होगा कि दुनिया का एक ख़ुदा है जो यह चाहता है कि सब लोग अमन में रहें।

और जब यह सिद्धान्त होगा, इस पर व्यवहार होगा तभी ही इन्सान की इच्छाएँ स्वार्थ रहित हो सकेंगी बल्कि लोगों को व्यापक लाभ पहुंचाने वाली होंगी और जब यह होगा तो हमारी सोच में और अमन तथा सलामती स्थापित करने के और ही पैमाने होंगे। हम यह नहीं देखेंगे कि अमुक बात का हमें फ़ायदा पहुंचता है या नहीं बल्कि हम यह देखेंगे कि सारी दुनिया पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा? भौतिकता में डूबे लोग तो हमेशा अपने फ़ायदे के लिए दूसरों के अमन को बर्बाद करते रहते हैं लेकिन जो यह विश्वास रखते हैं कि एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा मौजूद है जो हमें देख रहा है तो वे अमन ख़राब करने का दुस्साहस कभी नहीं करेंगे क्योंकि उन्हें पता है कि यदि हमने ऐसा किया तो सर्वशक्तिमान ख़ुदा हमें कुचल कर रख देगा। तात्पर्य यह कि

वास्तविक शांति उस समय तक स्थापित नहीं हो सकती जब तक एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा को स्वीकार न किया जाए और दिल में उस से लगाव न पैदा हो। **और यह दृढ़ विश्वास कि अल्लाह तआला अमन देने वाला है सिर्फ इस्लाम ने ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से प्रस्तुत किया है।**

अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

पर जो शिक्षा अवतरित की इस में फ़रमाया कि-

قَدۡ جَآءَکُمۡ مِّنَ اللّٰہِ نُوۡرٌ وَّ کِتٰبٌ مُّبِیۡنٌ ﴿۱۶﴾ یَّہۡدِیۡ بِہِ اللّٰہُ مَنِ اتَّبَعَ رِضۡوَانَہٗ سُبُلَ السَّلٰمِ (अलमाइदा : 16-17)

अर्थात निस्संदेह तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से एक नूर आ चुका है और एक रोशन किताब भी। अल्लाह इसके माध्यम से उन्हें जो उसकी इच्छा का अनुकरण करें, सलामती की राहों की तरफ़ हिदायत देता है।

अतः अल्लाह तआला ने तो नूर-ए-हिदायत भेज दिया, एक किताब भी समस्त आदेशों के साथ भेज दी और इस में सलामती की राहों की तरफ़ स्पष्ट निर्देश भी वर्णन कर दिए। अब जो लोग उस का पूर्ण अनुसरण करेंगे वही सलामती की राहों को पाने वाले होंगे। यदि आज मुसलमानों में लड़ाई-झगड़े की परिस्थिति है, आपस में जंगों की परिस्थिति है तो स्पष्ट है कि यह अल्लाह तआला की दी हुई और भेजी हुई किताब और नूर का पूर्णतः अनुसरण नहीं कर रहे। चाहे दावे हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करते हैं लेकिन व्यवहार उसके विरुद्ध है। अल्लाह तआला का कथन तो कभी ग़लत नहीं हो सकता। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातें कभी ग़लत नहीं हो सकतीं।

यदि मुसलमानों में लड़ाई-झगड़ा और फ़ितना-फ़साद है तो स्पष्ट है कि ये खोलकर बयान कर देने वाली इस किताब को मानने का दावा तो करते हैं परन्तु अल्लाह तआला ने इस में जो शिक्षा दी है उस का अनुसरण नहीं कर रहे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम का दावा तो करते हैं

लेकिन उनके आदर्शों तथा शिक्षाओं पर चलते नहीं।

अत: आज आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम के मानने वालों का यह काम है कि इस शिक्षा को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएँ। क़ुरआन-ए-करीम के आदेशों पर चलें तभी अपने माहौल में सलामती पैदा कर सकते हैं और दुनिया को भी सलामती का संदेश दे सकते हैं अन्यथा दुनिया कहेगी कि अपनी कथनी और करनी एक समान करो फिर हमें नसीहत करना।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : ''अब आसमान के नीचे केवल एक ही नबी और एक ही किताब है अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जो पद-प्रतिष्ठा में सब नबियों से बढ़कर और प्रधानता, पराकाष्ठा में सब रसूलों से उत्कृष्ट और खातमुल अँबिया (समस्त नबियों के गौरव) और लोगों में सबसे उत्तम हैं। जिनकी पैरवी से ख़ुदा तआला मिलता है और अंधकार के बादल छट जाते हैं और इसी संसार में सच्ची नजात (मुक्ति) के चिन्ह स्पष्ट होते हैं और क़ुरआन शरीफ़ जो सच्चा और पूर्ण मार्गदर्शन और गुणों पर आधारित है जिसके माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होते हैं और मानवीय अपवित्रताओं से दिल पवित्र होता है और इन्सान मूर्खता तथा आलस्य और संदेहों के पर्दों से मुक्ति पाकर हक़्कुल्-यक़ीन (पूर्ण विश्वास) के स्थान तक पहुंच जाता है।''

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 557-558 हाशिया दर हाशिया)

अतः अल्लाह तआला ने अपने नूर, जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और क़ुरआन करीम जो रोशन किताब और समस्त ज्ञान एवं आध्यात्म ज्ञान का मुख्य स्त्रोत और हिदायत का सूर्य है और सलामती का पैग़ाम है, को भेजकर मानवजाति पर बहुत बड़ा उपकार किया है। यदि इन्सान इस से फ़ायदा न उठाए और अपनी विनाशक स्वार्थपरायणता में ही डूबा रहे तो इस से बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

अतः यदि अपना लोक और परलोक संवारना है, अमन और सलामती से रहना है तो हमें अल्लाह तआला के इस (विधान)को जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरा हमेशा अपने सामने रखना चाहिए कि يَّهۡدِىۡ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضۡوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ इस रोशन किताब की शिक्षा को हमेशा अपने सामने रखें। तभी सलामती के मार्गों पर चलने वाले होंगे। इस किताब का कोई भी आदेश ऐसा नहीं जो इन्सानी अमन को बर्बाद करने वाला हो।

अतः यह संदेश है जो अपनों और ग़ैरों को देना आज हमारा कर्तव्य है और यही दुनिया के अमन की ज़मानत है।

और यही वह बदलाव था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा में पैदा किया और व्यावहारिक रूप से ऐसी जमाअत तैयार कर दी जो اِذَا خَاطَبَهُمُ الۡجٰهِلُوۡنَ قَالُوۡا سَلٰمًا (अल फुरक़ान : 64) (अनुवाद और जब मूर्ख उनसे संबोधित होते तो कहते तुम सलामत रहो) का चरितार्थ बन गए और यही वह हालत है जब हम में पैदा हो जाए और हम लोगों में पैदा कर दें

तो हम आज भी अमन में होंगे और कल भी।

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों का यह एक बहुत बड़ा काम है जिन्होंने अपने घरों और अपने माहौल में भी अमन और सलामती पैदा करनी है और पूरी दुनिया में भी अमन और सलामती पैदा करनी है। और यह काम उसी वक़्त होगा जब हमारे दिल भी एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा पर पूर्ण विश्वास से भरे हुए होंगे और समस्त मानवजाति को भी उसकी ओर लाने वाले होंगे।

यह बात पूर्णतः सत्य है कि पूर्ण एकेश्वरवाद (तौहीद) के स्थायित्व के बिना अमन संभव नहीं। पहले भी वर्णन कर चुका हूँ कि एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा को हर हाल में स्वीकार करना होगा और वह सर्वशक्तिमान हस्ती अल्लाह तआला की हस्ती है और इसकी धारणा, उसके एक होने को दिल में बैठाए बिना पैदा ही नहीं हो सकती और यह पैदा नहीं होगी तो लड़ाइयाँ जारी रहेंगी। लड़ाइयाँ तो तभी बंद हो सकती हैं जब सच्चा भाईचारा पैदा हो, पारस्परिक प्रेम और सौहार्द पैदा हो, भाईचारे की परिस्थितियाँ पैदा हों।

अमन उस समय तक क़ायम हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर वास्तविक भाईचारा पैदा न हो और वास्तविक भाईचारा एक सर्वशक्तिमान ख़ुदा को स्वीकार करने और उससे लगाव पैदा किए बिना नहीं हो सकता, केवल मानना ही नहीं अपितु एक संबंध भी स्थापित करना होगा और इसकी व्यापक शिक्षा भी हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से ही मिली है। इसलिए अल्लाह तआला ने اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ

(अलफ़ातिहा : 2) की तालीम जब हमें क़ुरआन-ए-करीम में दी तो उसे हर नमाज़ में पढ़ने का आदेश भी दिया ताकि मुसलमानों में भाईचारे का विस्तृत विचार उत्पन्न हो। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ पढ़ कर ख़ुदा तआला की रब्बूबिय्यत (पालनहारिता) समस्त संसार पर फैले होने की सोच पैदा होती है। इस शिक्षा को पढ़कर इन्सान की सोच विस्तृत होती है और वह उस ख़ुदा की प्रशंसा करता है जो समस्त संसार और समस्त लोकों का रब है। जो ईसाइयों का भी रब है, हिन्दुओं का भी रब्ब है, यहूदियों का भी रब है और हर एक का रब है। जब ये कलिमात इन्सान पढ़ता है तो फिर किसी से नफ़रत क्योंकर हो सकती है। यही बात मैंने एक दफ़ा अमरीका में ग़ैरों की एक मज्लिस में वर्णन की तो वे आश्चर्य में पड़कर कहने लगे यह शिक्षा कैसी शिक्षा है! वस्तुतः इस्लाम की शिक्षा ऐसी है जो कभी एक वास्तविक मुसलमान के दिल में दूसरे के लिए ईर्षा तथा द्वेष उत्पन्न कर ही नहीं सकती। رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ के शब्दों ने तो सब अपनी परिधि में कर लिया है और यही चीज़ सलामती फैलाने के बड़े और विस्तृत मार्ग खोलती है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ में बता दिया गया कि

यदि वास्तविक तौहीद (एकेश्वरवाद) हो और रब्बुल अलमीन की प्रशंसा से इन्सान की ज़बान ओत-प्रोत हो तो यह संभाव ही नहीं कि इन्सान के दिल में किसी क़ौम के प्रति द्वेष हो, न इसाइयों के लिए, न हिंदूओं के लिए, न यहूदियों के लिए। यह किस तरह हो सकता है कि एक ओर तो वह उनकी बर्बादी की इच्छा रखे और दूसरी ओर उनको देखकर अल्लाह तआला की

स्तुति तथा प्रशंसा भी करे। यह हो ही नहीं सकता। अतः वास्तविक एकेश्वरवादी ही वास्तविक अमन तथा सलामती का समर्थक है। यदि मुसलमान वास्तव में इस नुक्ता को समझ लें और इस के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियों को ढालें तो दुनिया में वास्तविक अमन-प्रिय यही होंगे लेकिन फिर वही बात कि इस के लिए

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे गुलाम के साथ जुड़ना भी ज़रूरी है, तभी ज्ञान तथा आध्यात्मिकता की सही पहचान भी हो सकती है। लेकिन साथ ही मैं फिर कहूँगा कि यह हम पर भी ज़िम्मेदारी डालता है कि हम अपनी हालतों का जायज़ा लेते रहें। यह न हो कि हमारा इबादतों में اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ पढ़ना केवल शब्दों तक ही सीमित रहे और दिल उस की गहराई से ख़ाली हो। अगर दिल और दिमाग़ उस गहराई से ख़ाली हैं तो हम भी फ़ित्ना और फ़साद पैदा करने वालों में से ही होंगे। अमन तथा सलामती फैलाने वालों और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लाई हुई शिक्षा का अनुसरण करने वालों में से नहीं होंगे।

अतः अत्यंत सोच-विचार की ज़रूरत है, बड़ी चिंता का विषय है। आज हर अहमदी का काम है कि वास्तविक अमन और सुरक्षा दुनिया में उत्पन्न करने के लिए ख़ुदा-ए-वाहिद पर अपने ईमान को दृढ़ करे। ख़ुदा तआला के प्रेम को अपने दिलों में दृढ़ करे कि कोई और मुहब्बत उसकी जगह न ले सके। इसके आदेशों की पालना करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी हुई शिक्षा अर्थात क़ुरआन करीम को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाए। जब हमारे जीवनस्तर इस सीमा तक पहुँच जाएंगे कि क़ुरआन

करीम का हर आदेश और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हर उपदेश हमारी करनी तथा कथनी का हिस्सा बन जाएगा तब ही हम दुनिया को इस्लाम का वास्तविक संदेश पहुंचा सकेंगे। उन्हें वास्तविक अमन के उपाय की न केवल शिक्षा प्रस्तुत कर के बताएँगे बल्कि अपने व्यवहार से भी सिखाएँगे और यही दुनिया में वास्तविक अमन स्थापित करने का माध्यम है और यही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को विश्व अमन का महान अस्तित्व सिद्ध करने का माध्यम है। यही इस्लाम पर एतराज़ करने वालों के मुँह-बंद करने का माध्यम है। अतः **आज यह काम मसीह मौऊद की जमाअत के सपुर्द किया गया है। यदि हमने भी घरेलू सतह से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक इस के अनुसार अपनी भूमिका न निभाई तो हमारी अमन तथा सुरक्षा में रहने की कोई ज़मानत नहीं है, न ही हमारी नस्लों की अमन तथा सुरक्षा में रहने की कोई ज़मानत है** और न ही दुनिया के अमन-तथा सुरक्षा की कोई ज़मानत है। अल्लाह तआला हमें लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का माध्यम बनाए। अल्लाह तआला उत्तम ढंग से हमें कर्तव्य के निर्वहन का सामर्थ्य प्रदान करे।

हम अब दुआ करेंगे। दुआ में सब यह भी दुआ करें कि अल्लाह तआला सब जलसे में शामिल होने वालों को जलसे की बरकात प्राप्त करने वाला बनाए और हर एक को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनाए। दुनिया के हालात में जल्द हर तरह से अमन और सलामती पैदा करे ताकि हम अपने जलसे फिर बड़े पैमाने पर और उसी शान से हर प्रकार की चिंताओं से

मुक्त हो कर आयोजित कर सकें और जलसों को अपनी रूहानी और इल्मी प्यास बुझाने का माध्यम बनाएँ और वास्तव में अपने जीवन को इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार ढालने वाले बन जाएं। अल्लाह तआला के प्यार और उसके फ़ज़्ल को समेटने वाले हों। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक अता करे।

दुआ करने के बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया :- जर्मनी जलसा की जो हाज़िरी है वह पहले सुन लें फिर नारा लगाएं। कहते हैं जलसा की हमारी कुल हाज़िरी उन्नीस हज़ार सात सौ बयासी है जिसमें महिलाएं नौ हज़ार चार-सौ बयासी और मर्द दस हज़ार तीन सौ। और इस के अलावा जो दूसरे माध्यमों से लोग जलसा सालाना की कार्रवाई देख रहे हैं या सुन रहे हैं उनकी संख्या भी चालीस हज़ार से अधिक है। अच्छा अब अगला प्रोग्राम जो आपने करना है, करें।

(अख़बार अलफ़ज़्ल इंटरनैशनल 27 सितंबर 2022 ई. पृष्ठ 6 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆